International Journal of Education and Science Research Review ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-5 October- 2014
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

माध्यमिक स्तर के छात्रों एंव छात्राओं का बुद्धिलब्धि तथा सृजनात्मक के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

Km Mamta Rani
Research Scholar
Sai Nath University
Ranchi

Verma Poonam Ambica Prasad
M.A.
Subharti University
Meerut

Kamna Chauhan
Research Scholar
Sai Nath University
Ranchi

प्रस्तावना

सृजनात्मक मानव के क्रियाकलापों एंव निष्पत्ति के लिए आवश्यक है। सृजनात्मक का अर्थ वैज्ञानिकों या कलात्मक सर्जन से नहीं है, सृजनात्मक किसी भी व्यक्ति की क्रिया में पाई जाती है। समाज में कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के कार्य या व्यवसाय में सृजनात्मकता पाई जाती है। कोई भी मुक्त अभिव्यक्ति जो बालक भाषा, दृश्य, कला, संगीत, गति एंव गत्यात्मकता के द्वारा व्यक्त करता है तथा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है इससे उससे प्रतिबोधात्मक स्पष्टता आती है एंव अभिव्यक्ति हेतु उसमें संवेगात्मक गहनता आती है, बालक के व्यवहार में यहीं परिवर्तन सृजनात्मकता कहलाता है।

"मनुष्य जन्म लेने के पश्चात् सर्वप्रथम शैशवावस्था में आता है जिसकी अवस्था 5 वर्ष तक होती है। 6 से 12 वर्ष तक बाल्यावस्था, 12 से 18 वर्ष तक किशोरावस्था और इसके बाद युवावस्था प्रारम्भ होती है। व्यक्ति में सृजनात्मकता का सबसे अधिक विकास 12 वर्ष से 18 वर्ष के बीच किशोरावस्था में होता है।"

मानसिक योग्यता एंव सृजनात्मकता में एक परस्पर निर्भरता होती है। जैसे–जैसे बालक बड़ा होता है। उसकी मानसिक योग्यता का विकास होने लगता है। मानसिक योग्यता के विकास पर पर्यावरण का प्रभाव अधिक होता है। इसके साथ–साथ सृजनात्मकता का भी विकास होता है। जैसे–जैसे मानसिक योग्यता का विकास होता है वैसे–वैसे सृजनात्मकता का भी तेजी से विकास होने लगता है अथवा सृजनात्मकता का विकास करने पर मानसिक योग्यता विकसित हो जाती है अर्थात् हम यह भी कह सकते हैं कि बुद्धिलब्धि और सृजनात्मकता एक दूसरे के पूरक भी हो सकते हैं।

सृजनात्मकता लगभग सभी प्राणियों में पाई जाती है किसी में कम तो किसी में अधिक। जैसे अध्यापक, कर्ल्क, कृषक, औद्योगिक, कर्मचारी, श्रमिक, माता–पिता, रसोईयां आदि सभी अपने–अपने क्षेत्रों में सृजनशील है तथा देश और समाज को नवीन विधियोगं से कार्य करने में लाभकारी है। इनमें पर्याप्त सृजनात्मकता पाई जाती है। अतः यह स्पष्ट है कि समस्त व्यवसायों में अथवा क्षेत्रों में सृजनशील व्यक्ति होते हैं किन्तु यह आवश्यक नहीं कि एक सृजनशील व्यक्ति अपने क्षेत्र के अलावा अनय क्षेत्रों उतना ही सृजनशील हो। इस प्रकार सृजनशीलता से बुद्धिलब्धि का विकास होता है और बुद्धिलब्धि से सृजनशीलता का विकास होता है। यह एक दूसरे पर निर्भर प्रतीत होते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एंव महत्त्व

बालक की आयु बुद्धि के साथ–साथ उसमें मानसिक योग्यता और सृजनात्मकता का मूल्य और उद्देश्य बदलता जाता है वह यह समझने लगता है कि बदलते परिवेश के जीवन में समायोजन किस प्रकार करना है। वह अपने विवेकानुसार नई–नई युक्तियां विचारों में लाता है जिसे वह व्यवहारिक रुप देकर समायोजन करता है।

सृजनात्मकता से बालकों में नए कार्य के प्रति रुचि पैदा होती हैं जिससे उसे संतोष ही नहीं बल्कि आतमिक प्रसन्नता भी प्राप्त होती है। जैसे– (1) बच्चे खेल–खेल में किसी डिब्बे को उल्टा करके पीटने वाला एक यंत्र जैसा बना लेते है। (2) माचिस की डिब्बी से टेलीफोन बना लेते हैं। (3) मिट्टी के दीपक से तराजू बना लेते हैं। सृजनात्मक बालक हमेशा नवीन अन्वेषणों की तरह उन्मुक्त होते हैं। इनमें जिन बालकों का मानसिक विकास स्वसथ तथा संतुलित होता है वे नवीनता की खोज में जागरुक रहते हैं और कार्य सुचारु रुप से सम्पन्न करते हैं। जब बालक का मानसिक विकास संकुचित होता है तब बालक मानसिक योग्य होते हुए सृजनशील नहीं हो पाता है। बालक की योग्यता एंव मानसिक कल्पनाओं को परिवार और समाज का परिवेश विकसित करता है। सृजनात्मकता एंव मानसिक योग्यता स्थान, समाज एंव मानवीय परिवेश से भी प्रभावित होती है। शोधकर्ता ने अपने अनुभवों में कई ऐसे उदाहरणों को देखा है जिनमें आश्चर्यजनक रुप से सृजनात्मकता कौशल विद्यमान था किन्तु उनकी पारिवारिक एंव

सामाजिक स्थिति की निम्नता उनके लिए अभिशाप रही और वे अपनी प्रतिभा को निखार नहीं सके। विद्यालय में यदि कोई छात्र जिज्ञासापूर्वक प्रश्न पूछता है या कोई मौलिक प्रश्नोत्तर लिखता है तो शिक्षक के द्वारा उसे मान्यता नहीं दी जाती है। पाठयक्रम के सैद्धान्तिक सूत्रों को रटना ही शिक्षा की उद्देश्य रह गया है। इस प्रकार बालक में सृजनात्मक कौशल विकसित करने की आवश्यकता है।

बुद्धिलब्धि

मानसिक आयु के आधार पर स्टर्न तथा टर्मन ने बुद्धिलब्धि का विचार प्रतिपादित किया। बिने के अनुसार बुद्धिलब्धि बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक स्थिर नही रहती हैं बल्कि प्रतिवर्ष बढ़ती है। बाद में एक अवस्था ऐसी होती है कि जब स्थिर हो जाती है। बुद्धिलब्धि व्यक्ति की मानसिक योग्यता की गति बताती है कोल एंव ब्रुस के अनुसार "बुद्धिलब्धि यह बताती है कि मानसिक योग्यता में किस गति से विकास हो रहा है।" टर्मन ने बुद्धिलब्धि ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया है जो निम्न प्रकार है–

बुद्धिलब्धि त्र

मानसिक आयु बालक और बालिका की मानसिक योग्यता बताती है जिसका मापन हम किसी भी मनोवैज्ञानिक परीक्षण से कर सकते हैं।

सृजनात्मकता

सृजनात्मकता से तात्पर्य उन मौलिक कार्य को करने या नए विचारों के सृजन करने से है जिनसे तत्काल समाधान प्राप्त हो जाये।

मानसिक योग्यता संबंधित अध्ययन

- **रेडिन (1973)**, ने अपने अध्ययन में पाया कि बौद्धिक कार्यों पवर बालकों के संरक्षकों के व्यवहार एंव उनकी सृजनशीलता का भी प्रभाव पड़ता है। उन्होंने पाया कि किशोरावस्था के बाद लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की मानसिक योग्यता में वृद्धि समान रुप से नहीं हो पाती है।
- **गोरे (1990), कुमारी (1992)**, ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च सृजनात्मक व्यक्ति अधिक अभिप्रेरित होते हैं अपेक्षाकृत रुढ़िवादी विचारों के व्यक्तियों से वे आत्मस्थान तथा आत्मसिद्धि को पाने के लिए प्रयासरत रहते हैं। ऐसे लोग आशावदी कर्मनिष्ठ विचारों के पाए गए।

सृजनात्मकता संबमधी अध्ययन

- **लैम्बराइट (1965),** ने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी बालकों की अपेक्षा ग्रामीण बालकों में सृजनात्मकता कम होती है। इसका कारण उन्होंने बताया कि ग्रामीण बालकों का पालन प्रभुत्वशाली वातावरण में होता है। उन्हें स्वतन्त्रता कम मिलती है, साधनों का आभाव होता है। अतः बालकों में सृजनात्मकता का विकास अवरुद्ध हो जाता है।
- **गुप्ता (1988)**, ने माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता तथा मानसिक योग्यता के प्रभावों का अध्ययन किया इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सृजनात्मकता तथा मानसिक योग्यता में संबंध का अध्ययन करना था। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण बालकों में बुद्धि व सृजनात्मकता शहरी बालकों की अपेक्षा कम होती है। माध्यमिक स्तर पर यह सम्बन्ध निम्न धनात्मक पाया तथा 14–15 वर्ष की आयु के बालकों में मानसिक योग्यता तथा सृजनात्मकता का स्तर निम्न पाया गया।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

छात्र–छात्राओं की मानसिक योग्यता एंव सृजनात्मकता के प्रभाव के लिए इस क्षेत्र में और अधिक अनुसंधान कार्य अपेक्षित हैं। बालक राष्ट्र के कर्णाधार होते हैं जो शिक्षा पाकर अपने आपकों पूर्ण विकसित और श्रेष्ठ नागरिक बनाते हैं।
प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं–

1. छात्र छात्राओं के अपने ज्ञान में पूर्ण वृद्धि करनी चाहिए ताकि उनका मानसिक विकास हो।

2. जितनी भी मानसिक योग्यता हो उसका पूर्ण उपयोग अपने समस्त कार्यों तथा परिस्थितियों में करना चाहिए ताकि उनमें नवीनता विकसित हो और आत्मविश्वास बढ़े।
3. छात्र–छात्राओं को अपने कार्य व्यवहार में नवीनता, मौलिकता, चिन्तनशीलता तथा काल्पनिकता आदि गुण विकसित करके सृजनात्मकता को विकसित करना चाहिए।
4. बालकों को उपलब्ध साधनों का भरपूर प्रयोग तथा हर बार कुछ नया करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।
5. छात्र एंव छात्राओं को सदैव स्वअनुशासन में रहकर प्रसन्नचित्त रहना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एंजिवोला आर. चर्चिलआर्ट फार प्री एडोलेवेन्ट्स मैक्ग्राहिल बुक कम्पनी, न्यू देहली 1971 पेज 3
2. एडवर्ड, डब्ल्यू विनिमय स्टेटस्टिकल रीजनींग इन साइकोलोजी एण्ड एजूकेशन जान सन्स विले सन्स, इन्क, एन वाई 197 पेज 12
3. कौपले वैलक कोगन के सृजनात्मक परीक्षण पर एक अध्ययन' ब्रिटिश जनरल ऑफ एजूकेशनल साइलॉजी, 1968 पेज नं. (199–201)।
4. कुमार गिरिजेश सृजनात्मक चिन्तन का व्यक्तित्व,वैल्यू ऑरिएन्टेशन तथा निष्पत्ति प्रेरणा के संम्बन्ध में अध्ययन'' हिन्द कालेज, मुरादाबाद, इण्डियन, एजूकेशन रिव्यू, वाल्यूम नं.2 (1978)।
5. कपिल एच. के. सांख्यिकी के मूल आधार, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, 1975
6. गिलफर्ड जे. पी. लोअरफील्ड एवं इटाल मौरिस ई.ई. द्वारा साइक्लोजिकल फाउन्डेशन ऑफ एजूकेशन (1951) पेज नं. 716
7. टायलर सी.डब्ल्यू क्रिएटिविट पोग्रेस पोटोपोटेन्शियल न्यूयार्क एम.सी.ग्रो हिल बुक कम्पनी (1964)।
8. टौरेन्स ई.पी. गाइडिंग क्रिएटिव ईगल बुक एम.टी. प्रिंसटन हॉल (1962)।
9. थारपर एस.साइकोलोजी आफॅ विक्टोरियल एक्सप्रेशन पब्लिसड वाई सन्डोज यू0एस0ए0।
10. पैक हाबर्ट एफ मैक्सिकन व टैक्सास (संयुक्त राज्य अमेरिका) विश्वविद्यालय के छात्रों के मूल्यों का अध्ययन किया (1967)।
11. पाठक पी.डी.शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
12. बुच एम.बी. सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन ;पअजीद्ध 1992 पे. नं. 198–227
13. भार्गव महेश मॉर्डन साइकोलोजिकल टेस्टिंग एण्ड भार्गव कचहरी गेट, आगरा, 1976 पेज 178।
14. भटनागर सुरेश बाल विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध,विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
15. मेहन्दी, वाकर क्रिएटिवीटी इन्टेलिजेन्स एण्ड अचीवमेंट ए कोरिलेशन स्टडी साइकलोजिकल स्टडीज वाल्यूम 22 जनवरी 1977।
16. रेलवे ए सिल्वर डेवलपिंग काननीटिव एण्ड क्रिएटिवीटी स्किलस आर्ट यूनिवर्सिटी पार्क प्रेस बाल्टीमोर 1978।
17. मेहन्दी बाकर मैनुअल सृजनात्मक चिन्तन शाब्दिक परीक्षण 1973।
18. रेना एम.के. ए स्टडी ऑफ सेक्स डिफरेन्सेस इन क्रियेटिविटि रिसर्च देयर रीजनल कॉलेज ऑफ द एजूकेशन, अजमेर 1966।
19. राय, पारसनाथ एवं भटनागर, चांद अनुसंधान–परिचय, लक्ष्मी नारायण, अग्रवाल आगरा।
20. वर्मा लोकेश कुमार विनोदी प्रकृति के विद्याथियों कीसृजनात्मकता का अध्ययन'', कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, राजस्थान बोर्ड, जनरल ऑफ एजूकेशन अक्तूबर–दिसम्बर 1977, वाल्यूम–8